मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 90,अगस्त(प्रथम), 2020

संतोष पटेल के कविता संग्रह "जारी है लड़ाई" की समीक्षा

समीक्षक: कृपी कश्यप

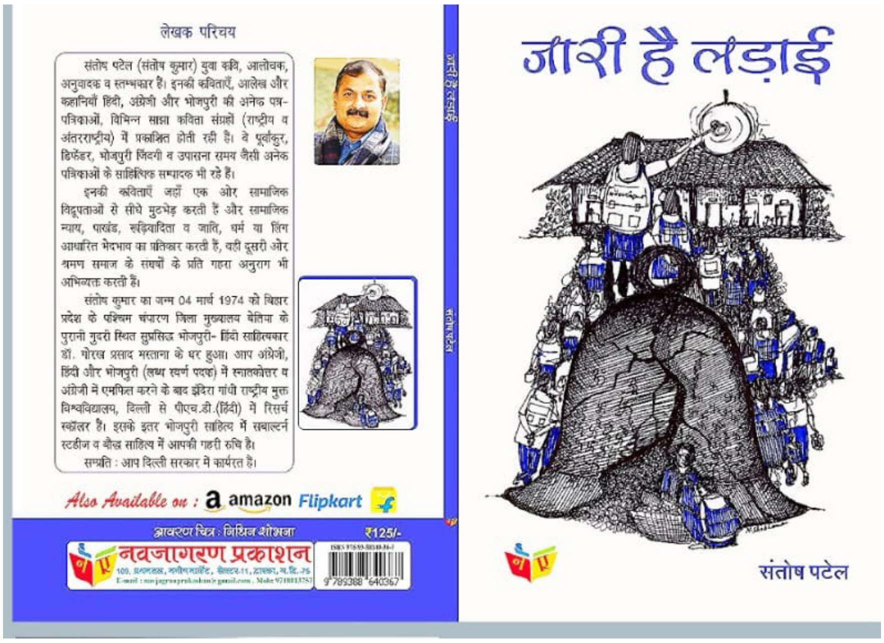

लेखक परिचय

संतोष पटेल (संतोष कुमार) युवा कवि, आलोचक, अनुवादक व स्तम्भकार हैं। इनकी कविताएँ, आलेख और कहानियाँ हिंदी, अंग्रेजी और भोजपुरी की अनेक पत्र-पत्रिकाओं, विभिन्न साझा कविता संग्रहों (राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय) में प्रकाशित होती रही है। वे पूर्वांकुर, डिफेंडर, भोजपुरी जिंदगी व उपासना समय जैसी अनेक पत्रिकाओं के साहित्यिक सम्पादक भी रहे हैं।

इनकी कविताएँ जहाँ एक ओर सामाजिक विद्रूपताओं से सीधे मुठभेड़ करती हैं और सामाजिक न्याय, पाखंड, रूढ़िवादिता व जाति, धर्म या लिंग आधारित भेदभाव का प्रतिकार करती हैं, वहीं दूसरी ओर श्रमण समाज के संघर्षों के प्रति गहरा अनुराग भी अभिव्यक्त करती हैं।

संतोष कुमार का जन्म 04 मार्च 1974 को बिहार प्रदेश के पश्चिम चंपारण जिला मुख्यालय बेतिया के पुरानी गुदरी स्थित सुप्रसिद्ध भोजपुरी- हिंदी साहित्यकार डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना के घर हुआ। आप अंग्रेजी, हिंदी और भोजपुरी (लब्ध स्वर्ण पदक) में स्नातकोत्तर व अंग्रेजी में एमफिल करने के बाद इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली से पीएच.डी.(हिंदी) में रिसर्च स्कॉलर हैं। इसके इतर भोजपुरी साहित्य में सबाल्टर्न स्टडीज व बौद्ध साहित्य में आपकी गहरी रुचि है।

सम्प्रति : आप दिल्ली सरकार में कार्यरत हैं।

क्रांति परिवर्तन के लिए जरूरी है।कवि संतोष पटेल की कविता संग्रह "जारी है लड़ाई" आज मैंने पढ़ी। इन कविताओं को पढ़कर मुझे जो महसूस हुआ, जिसे मैं आपके सामने साझा कर रही हूँ। कवि की लेखनी के ताकत को देखते हुए, अनायास ही रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित पंक्तियां " याद आ गई।

"कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली
दिल ही नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली"

कवि संतोष पटेल का यह काव्य संग्रह क्रांतिकारी भाव से प्रेरित है। कवि एक सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं जो हाशिए के समाज ,दलित-पिछड़ों की समस्याओं एवं समाधान, उन्हें उचित न्याय दिलाने, उनकी प्रगति एवं जागृति के लिए निरंतर कार्यरत रहे हैं। इसके अलावा अपनी मातृभाषा भोजपुरी को आठवीं सूची में लाने के लिए अनवरत रूप से धरना प्रदर्शन, दिल्ली के जंतर मंतर पर व सोशल मीडिया आदि के माध्यम से अपनी बात सरकार को पहुंचाने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। ऐसे व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति जब काव्य सृजन करता हैं, तो उसकी रचनाएं ,उसके संघर्ष ,उसकी क्रांतिकारी विचार हुंकार भरते हुए ,तराशे गए शब्दों की पंक्तियों के रूप में खिलकर आते हैं। पाठक इन्हें पढ़ते समय स्वयं को उसी कविता में शामिल पाते हैं, इस तरह यह कविता संग्रह आत्मीयता के भाव अधिक होने के कारण पाठकों को अपने साथ जोड़ कर रखती हैं

।अनंत संभावनाओं से युक्त जीवन के अनछुए पहलुओं को कवि ने अपनी उर्वर प्रतिभा के साथ उभार कर लाने का प्रयास किया है ,एवं उसमें सफल भी हुए हैं। इस संग्रह की सबसे अच्छी बात इसका स्पष्ट दृष्टिकोण है ,ना उलझे हुए बिंब, ना भाव बोध के स्तर पर क्लिष्टता ।

इनकी कविता "मुझे जो घंटियां पसंद है" देखें-

"मुझे पसंद है स्कूल की घण्टियाँ
जो बनातीहै शिक्षित"

मुझे हमदर्दी है एंबुलेन्स की घण्टियों से' में जीवन की मार्मिकता एवं यथार्थ का सूक्ष्म चित्रण किया गया है । जिसमें समाज के उपेक्षित गरीब ,रोज की कमाई करने वाले दिहाड़ी मजदूरों की घंटियों की तुलना मंदिरों की घंटियों से की गई है। मंदिरों की घंटियाँ धार्मिक उन्मांधता एवं पाखंड परोसती है। जबकि राम दाने के लड्डू ,गट्टा ,हवा मिठाई ,मकई के लावा बेचने वाली घंटियां उसके परिवार का पेट की आग बुझाने का काम करती हैं । वही स्कूल की घंटी, एंबुलेंस की घंटी कवि को इसीलिए पसंद है क्योंकि यह किसी की जान बचाने और शिक्षित बनाने के लिए होती हैं। घण्टियों की श्रेष्ठता को कवि ने सूक्ष्मता से परिभाषित किया है।जिसने मुझे काफी प्रभावित किया है।

'एक चिड़िया' कविता में –

'संस्कारों के ढहते किलों के नीचे
दब गई है/एक चिड़िया/उसकी चहक'

जिसमें कवि के क्षुब्ध मन से निकली आह दिखती है। वर्तमान समय में मानवता को शर्मसार करती घटनाएं इतनी बढ़ गई हैं ,कवि इनमें क्रांति की छुपी आग ,बदलाव का तार सप्तक देखते हैं। जो दामिनी निर्भया या ज्योति के बलिदान को जाया नहीं जाने देगा । ऐसी बदलाव की आंधी परम्परागत विचार धारा को तोड़ने का मार्ग प्रशस्त करेंगी ।महान भारत का और इसी सरजमीं पर चिड़ियों की तरह हमारी बहन बेटियां चहक सकेंगी ।यह एक आशावादी कविता है ।

"एक शब्द चुना है
संघर्ष के लिए
और डरने लगे हो तुम"

संविधान दलितों के सामाजिक, मानवीय, राजनैतिक एवं आर्थिक अधिकारों का दस्तावेज है यह दलित समाज के संघर्ष का ही प्रतिफल है। लेकिन समीक्षा के बहाने बार-बार लगातार संविधान की शक्ति को खोखला किया जा रहा है ,ताकि दलितों से उनके अधिकारों को छीना जा सके। दलित दुनिया के सृजनहार हैं, उत्पादक है ,कर्मठ, साहस वाले मेहनतकश लोग हैं ।इनको पूरी तरीके से पंगु बनाने की कवायद का उदाहरण कविता 'एक शब्द'है।

लोकतंत्र का चौथा खंभा कहे जाने वाले मुख्यधारा की मीडिया से कवि ने जो दंश भरे सवाल किए हैं वह समाज की मांग है ,क्योंकि आज की मीडिया सरकार की महिमामंडन करने ,चापलूसी करने, चरण वंदना में व्यस्त

है। उसे न तो समाज से मतलब है न ही वास्तविकता से। न दिखती है किसी गरीब की परेशानी न ही उनका दुख। निष्पक्षता का पहन कर नकाब, खेलते है हमारी भावनाओं से एक गंदा खेल।

"दशरथ मांझी" को कवि ने अपने कविता में क्रांति का दूत माना है। जिसने चट्टानों का सीना चीर कर दुर्गम मार्ग की दुश्वारियां को न्यूनतम करने का सफल प्रयास किया है उसे कवि ने बखूबी दर्शाया है। इसके अलावा और भी कविताएं हैं ,एक नारी होने के नाते नारी सशक्तिकरण की कविताएं मुझे खासी आकर्षित करती रही है। इसमें "पहली शिक्षिका " और "वर्षों पुरानी परंपरा टूट गई ",ऑनर किलिंग," फिर तुम ही जनों " कविताओं ने मुझे काफी प्रभावित किया।

"खाली करो जंगल" आदिवासियों का विकट जीवन वृतांत है ।

उनका घर जो जंगल है, से बेदखल करके ,उन्हें असहाय ,अनाथ बेघर बनाया जा रहा है और उनकी मजबूरियों का फायदा उठा कर उनके जीवन के साथ जो अन्याय हो रहा है उसके बारे में कवि खुलकर इस कविता में बता रहे हैं ।कवि ने समाज में व्याप्त बुराइयों और अन्याय के विरुद्ध शंखनाद किया है, एवं एक कवि होने के नाते सारे विषयों पर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। कवि का यह काव्य संग्रह समतावादी विचारों को स्थापित करने का प्रयास दिखता है। जिससे समाज मे व्याप्त बुराइयों का अंत हो सके। कवि के इस प्रयास की सराहना होनी चाहिए कि इस विकट समय में भी वे अपनी बात डंके के चोट पर कहते हैं।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें
